मूल्यांकन एवं उसके प्रकार

उदाहरण सहित विस्तृत प्रस्तुति

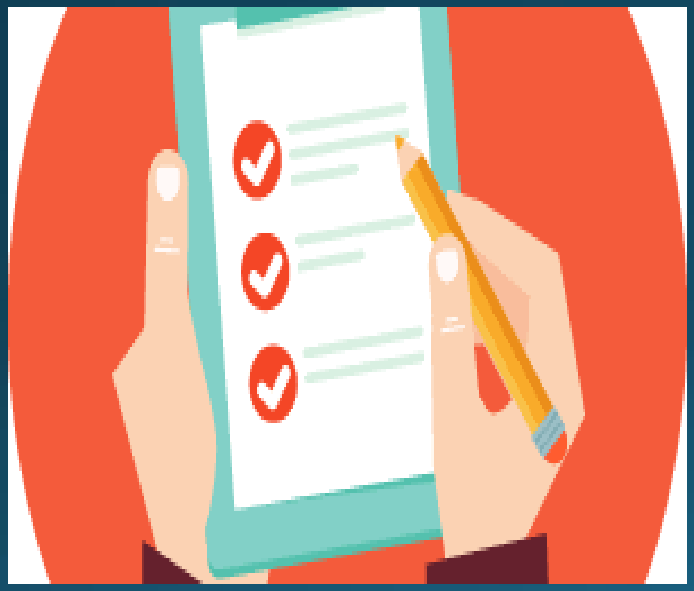

डॉ इति बैनर्जी
सहायक प्राध्यापक
शिक्षा विभाग
दुर्गा महाविद्यालय
रायपुर (छ.ग.)

मूल्यांकन क्या है?

मूल्यांकन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण भाग है।

यह विद्यार्थियों की उपलब्धियों, ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को मापने की प्रक्रिया है।

इससे शिक्षण की प्रभावशीलता का निर्धारण होता है।

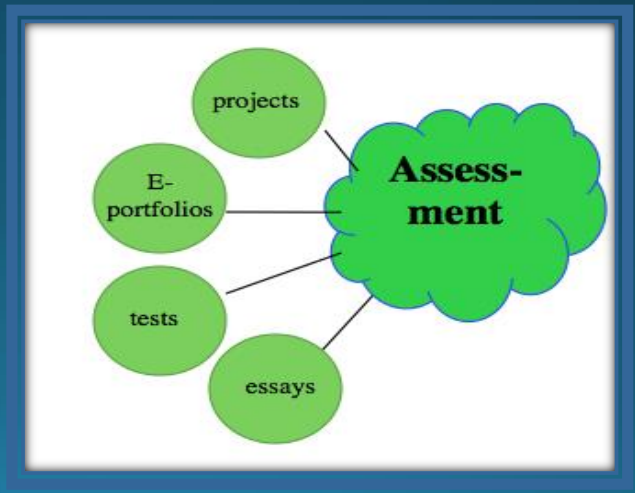

मूल्यांकन के उद्देश्य

- छात्र की सीखने की प्रगति को जानना
- शिक्षण की गुणवत्ता का मूल्यांकन
- सुधार हेतु सुझाव देना
- परिणाम के आधार पर निर्णय लेना

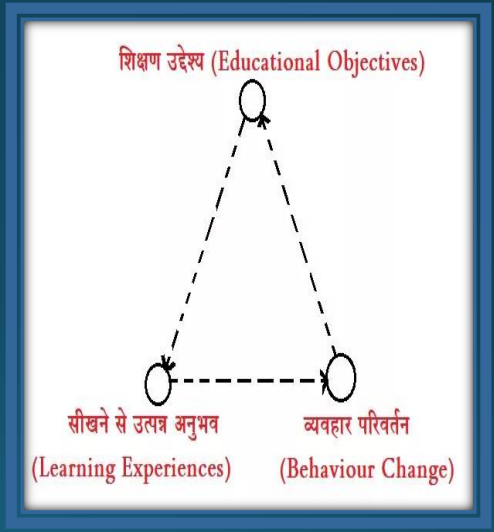

मूल्यांकन के प्रकार

1. प्रारंभिक मूल्यांकन (Diagnostic/Placement Evaluation)

2. प्रारूपिक मूल्यांकन (Formative Evaluation)

3. संप्राप्ति मूल्यांकन (Summative Evaluation)

4. निरंतर और व्यापक मूल्यांकन (CCE - Continuous and Comprehensive Evaluation)

प्रारंभिक मूल्यांकन

- कक्षा की शुरुआत में किया जाता है।
- उद्देश्य: छात्र की पूर्व जानकारी और आवश्यकता का पता लगाना।
- उदाहरण: पूर्व-परीक्षा, प्रश्नोत्तरी, चर्चा।

प्रारूपिक मूल्यांकन

- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान किया जाता है।
- उद्देश्य: सीखने की प्रक्रिया में सुधार करना।
- उदाहरण: गृहकार्य, कक्षा गतिविधियाँ, छोटे परीक्षण।

संप्राप्ति मूल्यांकन

- किसी इकाई/पाठ्यक्रम के अंत में किया जाता है।
- उद्देश्य: छात्र ने कितना सीखा यह जानना।
- उदाहरण: त्रैमासिक/वार्षिक परीक्षा, प्रोजेक्ट रिपोर्ट।

निरंतर और व्यापक मूल्यांकन

- यह मूल्यांकन प्रक्रिया को सतत और समग्र बनाता है।
- केवल अकादमिक नहीं, बल्कि सहशैक्षणिक क्षेत्रों का भी मूल्यांकन।
- उदाहरण: नैतिक मूल्य, खेल, कला, व्यवहार, उपस्थिति।

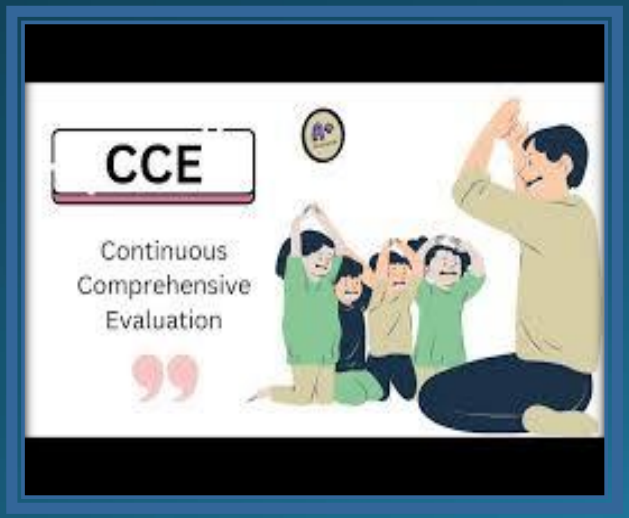

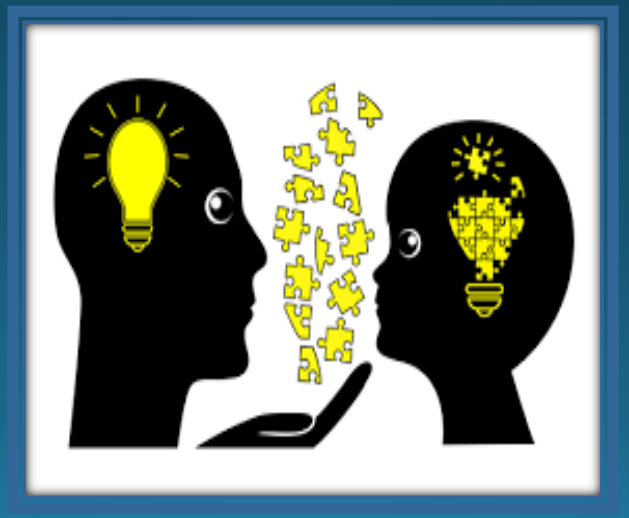

मूल्यांकन के तरीके

- लिखित परीक्षण
- मौखिक परीक्षण
- पर्यवेक्षण
- परियोजना कार्य
- व्यवहार आकलन
- स्व मूल्यांकन और सह-मूल्यांकन

निष्कर्ष

- मूल्यांकन से विद्यार्थी की प्रगति का पता चलता है।
- यह शिक्षण को दिशा देने वाला साधन है।
- उपयुक्त विधियों और प्रकारों का चयन आवश्यक है।

धन्यवाद